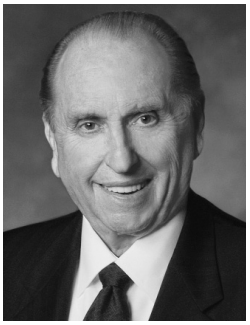

अध्यक्ष थामस एस.मॉनसन द्वारा

विकल्प

हमें कभी कठीन सच का विकल्प लेना होगा बाव'जजू'द आसान गलत के

भाईयों और बहनों, नियमानुसार संदेश शुरु करने से पहले आज, मैं चार मंदिर की धोषणा करना चाहता हूं जो आनेवाले महिनो और सालों में आएगें, निम्न जगहों पर बनाएं जाएंगे:क्युटो एक्युटोक्र, हरारे, जिमेब्वे,बेल्म,ब्रजील,और दुसरा मंदिर लीमा,पेरु में ।

जब मै 1963 में बारह प्रेरितों के परिषद का सदस्य बना था,वहां पर सम्पुर्ण गिरजा में 12 मंदिर संचालित थें । दो सप्ताह पहले प्रोवो शहर केन्द्र मंदिर का सम्पर्ण के साथ,यहां पर 150 संचालित मंदिर पूरे संसार में हो गए है । हम कितने आभारी है आशीषों के लिएह इन पवित्र घरों में पाते है ।

अब,भाईयों और बहनों,मैं अपने कुछ विचारों को इस सुबह आपके साथ बाँटने के अवसर पर आभार व्यक्त करना चाहता हूं।।

हाल ही मै विकल्पों के बारे में सोच रहा था । ऐसे कहा गया था कि इतिहास 'जज'ब दरवाजा बदलकर छोटा सा फंदा हो जाता है,और इसकी तरह से लोग जीते है । हम जो विकल्प लेते है हमारी नियति निर्धरित करता है ।

जब हमने आत्मिक संसार को छोड़ा था और नाशवरता में प्रवेश हुए,हम अपने साथ स्वत्रंता का उपहार लाएं थे । हमारा उदेश्य स्लेटियल महिमा को पाना है, और बड़े पैमाने में हम विकल्प करेंगे को, निश्चत करता है चाहे या न चाहे हम अपने लक्ष्य पर पहुंचंगे ।

आप में से बहुत से Alice in Lewis Carroll's उपन्यास से परिचित है *Alice's Adventures Wonderland* दिशा में । जैसे वह चिन्तन करती रही कहां को मोड़ना है, वह चेशयर बिल्ली से विवाद करती है, ऐलिस ने जिससे पूछा, ''किस पथ पर मैं जाऊं ?

बिल्ली उत्तर देती है, ''वह निर्धारित होता है कहां तुम्हें जाना है । अगर तुम नहीं जानती कहां तुम्हें जाना है,इसका कोई अर्थ नहीं कौन सा रास्ता तुम लेती हो ।''[1]

असंभव ऐलिस, हम जानते है कहां हमें जाना है,और यह मतलब रखता है किस ओर जाना है, जो रास्ता हम जीवन में अनुसरण करते हैं मार्गदर्शन कर हमें हमारे अगले जीवन के लक्ष्य को ले जाता है ।

चाहे हम अपने भीतर विश्वास को एक बड़ा और शक्तिशाली चुनाव कर बनाए जो कि हमारा अति प्रभावशाली विपत्ति के विरुध हिफ़ाजत करने वाला है—एक असल विश्वास, उस तरह का विश्वास जो हमारा समर्थन करता है और हमारी अभिलाषा सही का चुनाव करो का आधार होता है। ऐसे विश्वास के साथ हम कही नहीं जाते । इस के साथ, हम अपना लक्ष्य पूरा कर सकते है ।

यधपि यह अवश्य है कि हमें बुद्धिमानी से चुनाव करना है,ऐसे कई समयों में जब हमने मुर्खता वाले विकल्प लीए होंगे । पश्चाताप का उपहार, हमारे उद्धारकर्ता द्वारा प्रदान किया गया,अपने को कई बातों में सुधारकर सक्षम करें कि हम रास्ते पर लौट आएं जिससे की हम सेलिस्टीय महिमा की ओर चले जिसे हम दृढ़ रहे ।

हम शायद उपेक्षा की अनुकूलता के प्रोत्साहन को बनाएं रखें । हमें कभी कठीन सच का विकल्प लेना होगा बावजूद आसान गलत के ।

जैसे हम निर्णाय को ध्यान से लेते हम हर दिन अपने जीवन को बनाते है– चाहे इसका चुनाव करें या उसका चुनाव–यदि हम मसीह को चुनते है,हम सही का चुनाव करेंगे ।

कि यही मेरी हमेशा से हार्दिक और विनम्र प्रार्थना यीशु मसीह,हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के नाम में है,आमीन ।

विवरण

1. लुईस कॉरॉल, एलिस एडवॅन्स एन वान्डॅरलेन्ड (1898), 89 से लिया गया ।

हमारे समय के लिए शिक्षाएं

मई 2016 से लेकर अक्टूबर 2016 तक, मलकासिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था के चौथे रविवार के अध्याय की तैयारी अप्रैल 2016 की जनरल महासम्मेलन एक या अधिक वार्ता पर दी जानी है । अक्टूबर 2016 में चाहे अप्रैल या अक्टूबर की जनरल महासम्मेलन से होनी चाहिये । स्टेक और जिला अध्यक्ष कौन सी वार्ता उनके क्षेत्र में दी जानी चाहिये का विकल्प कर सकते है, या वे चाहे इस जिम्मेदारी को बिशप या शाखा अध्यक्ष दे सकते है ।

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति : 6/15 । अनुवाद अनुमति : 6/15 । *First Presidency Message, May 2016* का अनुवाद । Hindi । 12865 294

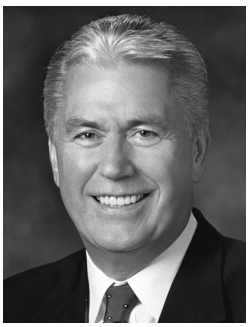

अध्यक्ष टिएटर एफ.उक्टॉफ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में दितीये सलाहकार

वह आपको को अपने कंधे पर उठाएंगा और आप को घर लाएगा

जैसे अच्छा गड़रिया उसकी खोई हुई भेंड़ को पाता है,यदि आप भी अपने हृदयों को संसार के उद्धारकर्ता की ओर बढ़ाएंगे, वह आप को पाएगा ।

मेरे बचपन की अक्सर की याद आने वाली यादो की शुरुआत कुछ ही दूरी के हवाई हमले के सायरन के साथ होती है जो मुझे नींद से जांगा देता है । उससे पहले,एक अन्य स्वर,घबरा देनेवाला और जहाज के पंखे की गुंज,धीरे धीरे बढ़ती हुई जब तक वह हवा को हिला न दे,आती थी । जैसे हमारी मां ने हमें करना सीखाया था, हम बच्चें अपना अपना तैयार किया बैग पकड़कर बम्ब शेल्टर की पहाड़ी की ओर दौड़ते थें । जैसे जैसे हम तेजी से अंधेरी रात से होकर जाते, हरा और सफेद चमकनेवाली झंडीयां आसमान से गिरती बम्ब फेकने वालो का निशान बनती हुई आती थी । अज्ञानता में उसे, हर कोई उसे क्रिस्मस ट्री कहता था ।

मैं चार साल का था,और मैं विश्व युद्ध का साक्षी हूं ।

ड्रसडन

ज्यादा दूर नहीं जहां मेरा परिवार ड्रसडन शहर में रहता था । वो जो वहां रहते थें शायद हजार गूना जो मैंने देखा था के गवाह थें । विशाल अग्नितुफान,हजारो टन के विस्फोटको के कारण ड्रसडन बर्बाद हो गया था 90 प्रतिशत से कही अधिक शहर खत्म हो गया और कुछ थोड़ा ही बचा लेकिन उसका मलबा और राख ही रह गया था ।

थोड़ा ही समय पहले शहर को ''ज्वैल बॉक्स'' उपनाम दिया गया था अब नहीं रहा था । इरिच कस्टनर, एक जर्मन लेखक ने, तबाही को लिखा था,''हजारों वर्षो में उसकी सुन्दरता बनी,एक रात में उसे पूरी तरह से उजाड़ दिया ।''[1] मेरे बचपन के दौरान मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था युद्ध की तवाही कैसे अपने खुद के लोगों का नाश करना आरंभ करती है क्या कभी उससे ऊभरा जा सकता है।हमारे चारो ओर का संसार पूरी तरह से आशाहीन लगने लगा,बिना किसी भविष्य के ।

पिछले साल ही मुझे ड्रसडन जाने का मौका मिला था । युद्ध के सत्तर वर्षो बाद,यही है,एक बार फिर से,शहर का एक ''ज्वैल बॉक्स'' । बर्बादी को साफ कर दिया गया था,और शहर को पुनःस्थापना हुई और यहां तक सुधार किया गया है ।

दौरा करने के दौरान मैंने सुन्दर लुथारन गिरजा देखा Frauenkirche, हमारी स्त्री का गिरजा । असल में 1700 में बनाया गया, यह ड्रस्डन का एक चमकदार गहना था, परन्तु युद्ध ने इसे मलबे का ढेर कर दिया था । कई सालो तक यह उसी दशा में पड़ा रहा था, आखिकार तबतक उसे Frauenkirche को दोबारा से बनाने का दृढ़ निश्चय न किया जाये ।

मलबे से इस्तेमाल होनेवाले पत्थरों को संभालकर और सूची में रखा,जब संभव हुआ और बहुतों को इसके पुनःनिमार्ण में लगाया गया । आज आप उन काले पत्थरों को बहरी दीवार में देख सकते हैं । यह ''दाग'' इस इमारत के सिर्फ इतिहास का ही नहीं बल्कि आशा की स्मारक की भी याद दिलाता है– राख से नया जीवन का प्रतीक बनाने की एक अद्भूत मनुष्य की कलाकृति का ।

जैसे मैं ड्रसडन के इतिहस पर चिन्तन और सरलता पर आश्चर्य करता हूं और उन पर जिन्होंने पूर्ण निमार्ण किया जो पूरी तरह से नष्ट हो चुका था,मैंने पवित्र आत्मा के मधुर प्रभाव को महसूस किया था । यकीनन,मैंने सोचा,यदि मनुष्य बर्बाद हुए,मलबे, और विनाश हुआ शहर को लेता और एक शानदार-प्रेरणाभरे ढ़ांचे का निमार्ण कर सकता है जोकि स्वर्ग की ओर खड़ा है,हमारा सर्वशाक्ति मान पिता और कितना सक्षम होगा अपने बच्चों को पुनःस्थापना करने के लिए जो गिर जाते,संघर्ष करते,या खो जाते है ?

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कितनी हमारी जिन्दगी बर्बाद हुई हो लगने लगाने में । इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कितने गहरे पाप,कितनी भी कड़वाहट,कितना अकेलापन,बिगड़ा हुआ,या हमारे दिल टुटे हो । यहां तक वे जो आशाहीन है, जो निराशा में जीते है,जिन के साथ विश्वासघात हुआ हो,वे जिन्होंने शराफत छोड़ दी,या परमेश्वर के विरुध तिरस्कार किया हो को फिर से बनाया जा सकता है । उन कुछ बर्बाद हुए बेटों को बचाएं,ऐसी बर्बाद हुई कोई जिन्दगी नहीं है जिसे दूबारा स्थापित न किया जा सकं ।

सुसमाचार की खुशी की खबर यह हैः क्योंकि हमारे स्वर्गीय पिता ने और यीशु मसीह

के असीम प्रायश्चित के द्वारा,हमें आनन्द की अनन्त योजना दी है,हम न ही सिर्फ अपने गिरते हुए स्थान से मुक्ति पा सकते और शुद्धता को फिर से स्थापित करते है,हम नाशवर कल्पना को भी ऊंचा उठा सकते है और अनन्त जीवन के वंशज बनते और परमेश्वर की अवर्णनीय महिमा को भी ले सकते है ।

खोई हुई भेंड़ का दृष्टान्त

उद्धारकर्ता की सेवकाई के दौरान, उसके समय के धार्मिक मार्गदर्शकों ने यीशु का उन लोगों से साथ समय व्यतीत करने को अस्वीकारा था जिन्हें वे ''पापी'' कहते थें ।

शायद उनको यह ऐसा लगता था वह झेल रहा था या यहां तक पाप से भरे व्यवहार को माफ कर रहा था । शायद वे भरोसा करते थें कि पापियों की अच्छे से मदद निन्दा,उपहास,और उनको शार्मिंदा कर पश्चाताप करने के द्वारा दी जाती है ।

जब उद्धारकर्ता ने पहले से जान लिया कि फरीसी और शास्त्री क्या सोच रहे थे,उसने एक साधारण कहानी बताईः

''तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हो,और उनमें से एक खो जाए, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाएं खोजता न रहें ?

''और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से, उसे कंधे पर उठा लेता है ।''[2]

सदीयों से,इस दृष्टान्त को परंपरागत रुप से वर्णन किया जाता रहा है जैसे हमारे लिये एक काम खोई हुई भेड़ें को वापस लाना और उन तक पहुंचना जो खो गएं है । जबकि यह वास्तव में उचित है, मैं चकित हूं अगर इस में और कुछ अधिक करने को होता।

क्या यह मुमकिन है कि यीशु का उदेश्य,पहला और सर्वश्रेष्ठ,अच्छा गड़रियां को काम के विषय में शिक्षा देना है ?

क्या यह मुमकिन है कि वह परमेश्वर का उसके हठीले बच्चों के प्रति प्रेम की गवाही देता था ?

क्या यह संभव है कि उद्धारकर्ता का संदेश था कि परमेश्वर जानता है उनको जो खो गएं–कि वह उनको दृढ करेंगा,उन तक पहुंचेगा,और उनको बचाएंगा ?

यदि ऐसा है तो,भेंड़ को इस पवित्र सहायता के योग्य होने के लिए क्या करना चाहिए ?

क्या भेंड़ को जानने की आवश्यकता है कैसे सेक्सटैंट को उसके अक्षांश संबंधी को जांचकर तालमेल कर इस्तेमाल करना है, क्या इसे जी पी एस से इस की स्थिति जानने के लिए इस्तेमाल करने की आवश्यकता होगी,क्या इसका एप बनाने के लिये विशेषज्ञ होना होगा जोकि मदद के लिये बुलाया जा सकेगा? क्या भेंड़ों को लोगों के द्वारा अच्छे गड़ारिये के बचाव में आने का विज्ञापन करने की आवश्यकता होगी ?

नहीं । सचमुच में नहीं ! भेंड़ साधारणता से बचाने के योग्य थी क्योंकि वह अच्छे गड़रिये का प्रेम था ।

मेरे लिये,खोई हुई भेंड़ का दृष्टान्त ही एक अत्यंत आशाभरा संदेश है सारे धर्मशास्त्र में ।

हमारा उद्धारकर्ता,अच्छा गड़रियां,जानता है और हम से प्रेम करता है । वह जानता और हम से प्रेम करता है ।

वह जानता है कब आप खो गएं,और वह जानता है आप कहां है । वह आप के दुख को जानता है । आप के शान्त प्रार्थना को । आप के भय को । आपके आसुंओ को ।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आप कैसे खो गएं–चाहे आप के स्वंय के बुरे चुनाव के कारण या आपकी क्षमता से अधिक परिस्थितियां के कारण हो ।

फर्क यह पड़ता है कि आप उसके बच्चे हैं । और वह आप से प्रेम करता है ।

क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है,वह आप को खोज लेगा । वह आप को अपने कंधे पर आनन्द से उठा लेगा । और जब वह आपको घर ले आता है, वह एक से और सब से कहेंगा, ''मेरे साथ आनन्द करो,क्योंकि मेरी खोई हुई भेंड़ मिल गई है ।''[3]

हमें क्या करना चाहिये ?

लेकिन आप सोच रहे होंगे,पकड़ना क्या है ? सच में मुझे कुछ अधिक करना होगा न कि सिर्फ बचाव का इन्तजार करने के ।

हालांकि हमारा पिता चाहता है कि उसके सारे बच्चे उसके पास लौटे, वह किसी को भी स्वर्ग के लिये जर्बदस्ती नहीं करेंगा ।[4] परमेश्वर हमारी इच्छा के विरुध में नहीं बचाएंगा ।

तो हमें क्या करना चाहिए ?

उसका निंत्रण साधारण हैः

''मेरी...मुड़ो । ''[5]

''मेरे पास आओ ।''[6]

''मेरा पास आओ और मैं तुम्हारे पास आऊंगा ।''[7]

इसी तरह से हम उसे दिखाते है कि हम बचना चाहते है ।

इसे थोड़े से विश्वास की आवश्यकता है । लेकिन निराशा न हो । यदि तुम्हारे पास अभी राई का सा विश्वास नहीं है,आशा से शुरुआत करो ।

यदि तुम जानते हो तुम कह नहीं सकते हो परमेश्वर वहां है,तुम आशा करते हो कि वह है । तुम भरोसे की चाह कर सकते हो ।[8] यह प्रांरभ करने को पर्याप्त होगा ।

तब, उसी आशा पर काम करें, अपने स्वर्गीय पिता तक पहुंचे । परमेश्वर अपना प्रेम तुम तक पहुंचाएगा, और उसका बचाने का और बदलाव का काम आंरभ होगा ।

आगे समय में, आप अपने जीवन में उसके हाथ के होने को पहचान पाएंगे । और उसके प्रेम का एहसास करेंगे । और उसकी रोशनी में चलने की और उसके मार्ग का अनुसरण कर विश्वास के साथ हर कदम उठाने की अभिलाषा करेंगे ।

हम इस विश्वास के कदमों को ''आज्ञाकारी कहते हैं ।''

इन दिनों यह प्रचलित शब्द नहीं है । परन्तु यीशु मसीह के सुसमाचार में आज्ञाकारी विषय को प्रोत्सहित किया गया,क्योंकि हम जानते हैं कि ''मसीह के प्रायश्चित के द्वारा,सारी मानवजाति, नियमों के प्रति आज्ञाकारी होने और सुसमाचार की धर्मविधियों के द्वारा बचाई जा सकती है ।''[9]

जैसे हम विश्वास में बढ़ते है, हम विश्वासी होने में भी बढ़ेगे । पहले मैंने एक जर्मन लेखक का संदर्भ दिया जिसने नष्ट हुए ड्रसडन को दिवंगत किया था । उसने इस कहावत को लिखाः ''इस गीब्ट नीचटेस गोट्स,ओस्र मन तउत एस ।'' उनके लिए जो स्लिटीयल भाषा

नहीं बोलते है, यह अनुवाद है जैसे ''यहां पर कुछ भी अच्छा नहीं है जब तक आप उसे करते नहीं हैं ।''[10]

आप और मैं अर्थपूर्ण ढ़ग से आत्मिक चीजों की बाते करते है । हम लोगों को हमारी उत्सुक्ता के साथ धार्मिक शीर्षको का बुद्धिजीवी अनुवाद कर प्रभावित करते है । हम धर्म के विषय में अत्यंत प्रशंसा करते और ऊपर में ''अपना घर को सपना देखते है ।''[11] लेकि न अगर हमारा विश्वास न बदला जैसे हम जीते है–यदि हमारा भरोसा प्रभावित न हुआ हमारे रोज के निर्णायों से —हमारा धर्म व्यर्थ है, और हमारा विश्वास यदि मरा नहीं तो,यह सचमुच में ठीक नहीं और यह आखिरकार खतरे में है । [12]

आज्ञाकारी होना विश्वास का जीवनरक्त है । यह आज्ञाकारी होने के द्वारा है कि हम अपनी आत्मा में प्रकाश इक्ट्ठा करते हैं ।

लेकिन कभी कभी मैं सोचता हूं हम आज्ञाकारी को गलत समझते है । हम उसे देख सकते जैसे उसी के अन्त में,न कि एक अन्त के अर्थ में । या हमें आज्ञाकारिता को आज्ञाओ के रुपक हथौड़े से लोहे की छड़ के विरुध मार कर,और लगातार गर्म कर के और और बार बार पीटने से, पवित्रता के भीतर स्वर्गीय कारणो से जिन से हम प्रेम करते है, को आकार में लाने का प्रयत्न करना चाहेगे ।

इस में कोई शक नहीं है,कुछ समय ऐसे होते है जब हमें पश्चाताप करने की सख्ती से पुकारने की जरुरत होती है । सच में,ऐसे भी कुछ है जो सिर्फ इसी तरह पहुंच सकते है ।

लेकिन यहां पर भिन्नभिन्न लक्ष्ण है जिसकी व्याख्या दी जा सकती है कि क्यों हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं । शायद आज्ञाकारिता झुकने,मरोड़ने,और हमारी आत्मा को धड़काना उन वस्तुओं के लिये जो हमारी नहीं है इतनी अधिक कार्यशील नहीं है । संभवत,इस के बावजूद,यही प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा हम खोजते है कि हम वास्तव में कैसे बने है ।

हम सर्वशाक्तिमान परमेश्वर द्वारा बनाएं गएं हैं । वह हमारा स्वर्गीय पिता है । हम सचमुच में उसके आत्मिक बच्चे हैं । हम दैव्वीए बहुत कीमती और उच्च निर्मल तत्व से बनें है, और तथापि हम पवित्रता के तत्व को हमारे भीतर लेकर चलते हैं ।

यहां धरती पर,हालांकि,हमारे विचार और काम उनके साथ जो भष्टाचार,अपवित्रता और अशुद्धता के साथ उलझ जाते है । कामुक संसार की धुल और गन्दगी हमारी आत्मा को दाग़दार कर देती है, उसे पहचानने में कठिन बनाता और हमारे जन्माधिकार और उदेश्य याद दिलाता है ।

परन्तु यह बदल नहीं सकता कि हम वास्तव में कौन है । पवित्र सिद्धान्त के हमारी प्रकृति के अवशेष है। और क्षण हम चुनते है अपने दिलों को हमारे प्रिये यीशु मसीह की ओर प्रेरित करने का और शिष्यता के रास्ते पर कदम रखने का,कुछ अद्भूत घट जाता है । परमेश्वर के प्रेम से हमारे हृदय भर जाते हैं,सच्ची रोशनी से हमारे मन भर जाता है, हम पाप करने की चाह से दूर होना शुरु करते है, और हम अब कभी भी अंधकार में चलना नहीं चाहते हैं ।[13]

हम आज्ञाकारिता को सजा के रुप में नहीं अपितु एक आजादी के रास्ते को हमारे पवित्र मंजिल की तरह देखें । और धीरे धीरे,भष्टाचार,धुल,और इस धरती की सीमाएं गिरनी शुरु हो जाती है । आखिरकार,अमुल्य,स्वर्गीयजन की अनन्त आत्मा हमारे साथ होकर प्रकट करता है,और अच्छाई की चमक हमारी प्रवृति बन जाती है ।

आप बचाव के योग्य है

मेरे प्रिये भाईयों और बहनों,मैं गवाही देता हूं कि परमेश्वर जैसे हम है वैसे देखता है— जैसे सच में हम है–और वह हमें बचाव के योग्य है देखता है ।

आप शायद महसूस करें कि आपका जीवन बर्बादी में है । शायद आपने पाप किया हो । शायद आप डरते,क्रोधित होते,मातम करते,या शंका से पीड़ित हो । परन्तु वैसे ही जैसे अच्छे गड़रिये ने उसकी खोई हुई भेंड़ को पाया था,अगर आप सिर्फ अपना हृदय संसार के उद्धारकर्ता की ओर ऊपर उठाएं,वह आप को खोज लेगा ।

वह आपको बचाएंगा ।

वह आपको अपने कंधे पर लेकर ऊपर उठाएगा ।

वह आपको उठाकर घर ले जाएगा ।

अगर नाशवर हाथ पत्थर को बदल सकते और आराधना करने का एक सुंदर घर बना सकते हैं,तब हम भरोसा कर सकते हैं कि हमारा स्वर्गीय पिता हमें दोबारा से बना सकता और बनाएंगा । उसकी योजना हम कभी जो थें उससे कही अधिक बड़ा बनाने की है — महानता से बड़कर जिस की हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं । विश्वास के हर एक कदम के साथ हम शिष्यता का मार्ग लेते है, हम अनन्त महिमा और असीम खुशी मे होकर उन्नति करते है जैसे हम बनाएं गएं थें ।

यह मेरी गवाही,मेरी आशीष,और मेरी विनम्रता से प्रार्थना है हमारे पवित्र स्वामी के नाम से, यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

विवरण,

1. देखें रिर्ट क्रिस्टीन, Als ich ein kleiner junge war *war* (1996), 51–52 देखें ।
2. लूका 15:4–5 ।
3. लूका 15:6 ।
4. देखें. know This,That Every Soul Is Free" ।
5. योएल 2:12 ।
6. मत्ती 11:28 ।
7. सिद्धान्त और अनुबंध 88:63 ।
8. देखें अलमा 32:27 ।
9. विश्वास के अनुछेद 1:3 ।
10. Erich kastner, Es gibt nichts, gutes auser, Man tui es (1950) ।
11. "Have I Done Any Good?" *Hymns,* no. 223 ।
12. देखें याकूब 2:26 ।
13. देखें यूहन्ना 8:12 ।

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति : 6/15 । अनुवाद अनुमति : 6/15 । *Visiting Teaching Message, May 2016* का अनुवाद । Hindi । 12865 294